ओम् शान्ति 14-2-12 मधुबन

''डबल फारेनर्स की मीटिंग में अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश'' (गुल्जार दादी)

आज आप सबका यादप्यार लेते हुए मैं बाबा के पास वतन में गई तो बाबा के नजदीक जाते-जाते कुछ समय के लिए बाबा की अमूल्य बांहों के झूले में झूलते मगन हो गई। फिर बाबा ने पूछा बच्ची आज क्या समाचार लाई हो? हमने कहा बाबा आज तो डबल विदेशी बच्चों का विशेष यादप्यार लाई हूँ। सभी बड़े उमंग-उत्साह से मीटिंग में बहुत अच्छे प्लैन बना रहे हैं और आज तो विशेष प्यार का दिन है इसलिए सभी ने कहा है कि हमारे प्रेमी को खास याद देना। तो बाबा बहुत मुस्कराये और कहा कि अच्छा आज विशेष प्रेम का दिन है तो बच्चों को संकल्प से वतन में बुलाता हूँ। बाबा ने संकल्प किया और मैंने देखा कि हर एक बड़े उमंग उत्साह से बाबा के सामने पहुंच गये और 7-8 लाइन में, अर्ध चन्द्रमा के रूप में बाबा के सामने खड़े हो गये। दूर से ऐसे लग रहा था जैसे बाबा के गले में 7-8 मालायें पड़ी हैं। बाबा बहुत-बहुत प्यार से हर एक बच्चे को दृष्टि दे रहे थे। सभी उसी प्रेम में समाये हुए बाबा की दृष्टि ले रहे थे। फिर बाबा ने कहा कि देखो बच्चे, आप सबका भी दिलाराम से प्यार है और दिलाराम का आप एक एक बच्चे से अति प्यार है। मैंने कहा बाबा आज तो फारेनर्स का दिन है, उसी अनुसार सभी के चेहरे प्रेम में समाये हुए हैं। तो बाबा ने कहा यह प्रेम ही तो बच्चों को आकर्षण करके यहाँ तक ले आया है। भले ज्ञान योग अच्छा लगता है लेकिन फिर भी पहले बाबा का, परिवार का प्यार ही खींच करके लाया है। फिर बाबा ने कहा कि देखो आज सभी बच्चों ने संकल्प किया है - मेरा तो एक बाप दूसरा न कोई। तो बाबा भी कहता कि मेरे तो आप बच्चे ही हो, यह दैवी परिवार ही मेरा है क्योंकि बाबा आपके लिए ही संगम पर आया है। आप परिवर्तित होते हो तो संसार भी परिवर्तित हो जाता है। बाबा अपने एक एक बच्चे को दिल की डिब्बी में हीरा बनाकर रखता है। आप बच्चे मेरे साथी हो और मैं भी आप बच्चों का साथी हूँ। मैं भी आपके बिना नहीं रह सकता और आप भी मेरे बिना नहीं रह सकते। ऐसे अनुभव करते हो? तो सभी मुस्कराने लगे। बाबा ने सर्टीफिकेट दिया कि सभी बच्चे मेरे प्रेम की लगन में खोये हुए हैं इसलिए बाबा सबको टाइटिल देता है ''मेरे लवलीन बच्चे'', प्यार में तो सभी बच्चे पास हैं, प्यार के कारण ही इतने आगे बढ़े हैं। लेकिन अब क्या करना है? तो बाबा ने याद दिलाया कि जब फारेन की सेवा शुरू हुई तो जनक बच्ची को बाबा ने कहा था कि आप वहाँ मधुबन का मॉडल बनाना। तो बाबा पूछता है कि जो भी जिम्मेवार बच्चे आये हैं, क्या हर एक ने अपने सेन्टर पर मधुबन जैसा वायुमण्डल बनाया है? बाबा की यही आश है कि एक एक सेन्टर चाहे छोटा है या बड़ा है लेकिन हर सेन्टर का वायुमण्डल मधुबन जैसा हो। अब विशेष अटेन्शन रखकर सेन्टर का वायुमण्डल मधुबन जैसा बनाना।

उसके बाद बाबा ने जब सबको दृष्टि दी तो बाबा के नयनों से दो लाइट निकल रही थी और वह लाइट सभी के मस्तक पर जब पड़ रही थी तो सबके मस्तक पर हीरे का ताज चमकने लगा। बाबा ने कहा मेरा एक एक बच्चा स्वराज्य अधिकारी है और विश्व के ताज का अधिकारी है।

फिर बाबा सभी बच्चों को वतन का चक्कर लगाने ले चला। बाबा आगे आगे था और दादी जानकी हाथ पकड़कर बाबा के साथ चल रही थी। हम सभी दो दो लाइन में बाबा के पीछे चल रहे थे। पहले बाबा एक बगीचे में सबको ले चला। बाबा ने कहा सभी इस बगीचे में घूमो और जिसको जो फल खाना हो खाओ। तो सभी प्यार से बाबा को देखते रहे और फल तोड़कर खाते रहे। उसके बाद फिर बाबा आगे बढ़ा और एक पहाड़ी पर ले चला और कहा अभी सभी को एक सेवा करनी है। सभी ज्वालामुखी योग की किरणों द्वारा दु:खियों को सुख चैन की अनुभूति कराओ, मन्सा सेवा करो। तो बाबा खुद भी बैठ गया और हम सब भी एक लाइन में बैठ गये। बाबा ने कहा आजकल संसार की हालत दिनप्रतिदिन बिगड़ रही है, ऐसे टाइम पर आपको रहम आना चाहिए कि हमारे भाई बहिनें कितने दु:खी हैं, उन्हें सुखी बनाना है। तो बाबा ने कहा 5 मिनट सभी को योग की किरणें दो। तो सभी बैठ गये और ऐसा वातावरण हो गया जो ऐसे लग रहा था जैसे यहाँ कोई है ही नहीं। सभी फरिश्ते रूप में मन्सा सेवा कर रहे थे। तो बाबा ने कहा जैसे वतन में सभी इकट्ठे बैठे हो तो कितना पावरफुल वायब्रेशन हो गया, ऐसे सेन्टर पर भी आपस में इकट्ठे होकर बैठो। जैसे सवेरे योग में बैठते हो, ऐसे शाम के समय भी सेन्टर का ऐसा वातावरण बनाओ जैसे फरिश्ते घूमने जाते हैं, ऐसे मन्सा द्वारा दु:खी आत्माओं को सुख शान्ति की किरणें दो जिससे वे आत्मायें शान्ति का अनुभव करें और खुश हो जाएं।

फिर बाबा सभी को एक हाल में ले चला और कहा यहाँ सभी अपने तीन स्वरूपों में बैठो। ब्राह्मण, फरिश्ता और देवता इन तीनों रूपों की स्मृति में सबको बिठा दिया। यह ड्रिल कराने के बाद बाबा ने कहा यह पावरफुल ड्रिल 5-10 मिनट रोज़ अपने सेन्टर पर भी करते रहेंगे तो सेन्टर का वायुमण्डल बदल जायेगा।

बाकी बाबा ने कहा मैं डबल विदेशियों के इस प्रोग्राम से बहुत बहुत खुश हूँ क्योंकि यहाँ मधुबन के वायुमण्डल में एक दो की सेवा करके एक दो को उमंग दिलाकर सब रिफ्रेश हो जाते हैं। समाचार की लेन देन भी करते हैं तो बाबा इस उमंग उत्साह में रहने और उमंग उत्साह बढ़ाने के कार्य की पदमगुणा मुबारक दे रहे हैं। मुबारक हो, मुबारक हो। ऐसे कहते बाबा ने एक एक को ऐसे बांहों में लेकरके दृष्टि दी और साकार वतन में भेज दिया। फिर हम और जानकी दादी बाबा के साथ रह गये। तो बाबा दादी को विशेष भाकी में लेकर गले की जैसे मालिस कर रहे थे। बाबा ने कहा बच्ची को उमंग-उत्साह बहुत है, इसलिए जिनकी सेवा के निमित्त हैं उनको टाइम देकर मेहनत करके समझती है कि हर एक आज ही सम्पूर्ण बन, उड़ती कला वाले फरिश्ते बन जायें। फिर बाबा ने कहा जिन बड़ी बहिनों ने भी सेवा की है, उन्हों को भी मेरे तरफ से बहुत बहुत बहुत दृष्टि के साथ मुबारक देना। फिर सबको यादप्यार देते हमें भी साकार वतन में भेज दिया। अच्छा - ओम् शान्ति।